Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 14, Issue March 2023 | Impact Factor 5.320

# हिन्दी फिल्म संगीत में प्रयुक्त मीरा बाई के पदों द्वारा भावाभिव्यक्ति

**भावना**
सहायक प्रध्यापक, संगीत एवं नृत्य विभाग, चौ. रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जीन्द

भारतीय संस्कृति में मोक्ष प्राप्ति को जीवन का परम उद्देश्य माना गया है। मोक्ष प्राप्ति के तीन मार्ग दर्शाये गए है जैसेः– ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग एवं भक्ति मार्ग। श्रीमद् भगवद् गीता के अनुसार भक्ति मार्ग को सर्वोत्तम माना गया है। परमात्मा के प्रति आसक्ति ही भक्ति का आधार कहा गया है जो भावनाओं और मोह माया से मुक्ति प्रदान कर आत्मिक आनन्द का अनुभव प्रदान करती है। भक्ति ही भारतीय संस्कृति का प्राणाधार है जो मोक्ष प्राप्ति का सशक्त एवं सरल साधन है। भक्ति एवं मुक्ति के मध्य गहरा सम्बन्ध है। भक्ति साधन है तो मुक्ति उसका लक्ष्य।

वैदिक युग से प्रवाहित होती आ रही भक्ति रूपी सरिता का न जाने कितने सन्तों महात्माओं ने रसोपान कर भवसागर को पार किया एवं मोक्ष को प्राप्त किया। अपने ईश्ट के प्रति आनन्द प्रेम एवं समर्पण की भावना को ही भक्ति कहा गया है।

हिन्दी के समस्त सन्त–साहित्य और भक्ति–साहित्य में परमानन्द की अनुभूति का माध्यम भक्ति संगीत ही बताया गया है। भक्ति के नौ प्रकारों में से अपने ईश्ट के गुणों का गान (कीर्तन) सहज एवं सर्वोत्तम है। गान के अधिक संवेदनभील होने पर माधुर्य भाव की उत्पत्ति होती है, जो ईश्वर प्राप्ति एवं मोक्ष प्राप्ति का मार्ग सरल बनाती है। संगीत के माध्यम से विभिन्न सन्तों, महाकवियों ने अपनी रचनाओं एवं पदों का संगीतबद्ध गान कर मोक्ष की प्राप्ति की।

**मीरा बाई के जीवन में कृष्ण भक्ति एवं संगीत का महत्व** :– भारतीय संगीत के मध्यकालीन इतिहास में संगीतमय एवं भक्तिमय पदों एवं काव्यों को संयोग की दृश्टि से 16वीं भाताब्दी का महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इसी भाताब्दी में तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास एवं रविदास जैसे अनन्य सन्तों ने अपने माधुर्ययुक्त, भक्तिमय एवं संगीत से परिपूर्ण रचनाओं एवं पदो के माध्यम से जन–जन को परामान्द की अनुभूति करवाई एवं उनके धार्मिक, अध्यात्मिक एवं आत्मिक उत्थान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी काल में हिन्दी साहित्य के इन सन्त कवियों के साथ–साथ राजस्थान की परम भूमि पर कृष्ण की एक ऐसी अनन्य भक्त कवियत्री एवं संगीतज्ञा का पदार्पण हुआ जिसने अपनी गीतिमय, भक्तिमय एवं संगीतमय मधुर वाणी के द्वारा सारे विश्व में भक्ति एवं संगीत का प्रचार–प्रसार किया एवं जनसाधारण को भक्ति के मार्ग को ओर अग्रसर करने में महत्त्वपुर्ण भमिका निभाई। मीरा बाई एक कवियत्री होने के साथ–साथ एक सफल गायिका एवं संगीत में भी पूर्ण रूप से सक्षम थी। मीरा बाई ने गायन के साथ–साथ नृत्य एवं वादन भौली का भी अभ्यास किया हुआ था। जैसे – करताल, एकतारी इत्यादि।

कहने का अभिप्राय यह है कि गायन, वादन एवं नृत्य इन तीनों कलाओं का अद्भुत समन्वय मीरा बाई की संगीत साधना में स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है। संगीत साधना के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति का साक्षात् प्रमाण मीरा बाई के भाास्त्रबद्ध, काव्यबद्ध एवं संगीतबद्ध एवं भावपूर्ण रचनाओं एवं भक्ति गीतों से मिलता है। जिस प्रकार काव्य रचनाओं की उत्पत्ति हमारे जीवन के अनुभव से होती है उसी प्रकार जब हम अपनी आत्मा को पूर्णतया परमात्मा में लीन कर संगीत की साधना करते हैं तब हमें परमानन्द की प्राप्ति होती है। मीरा बाई ने अपना सम्पूर्ण जीवन एवं संगीत अपने प्रियतम भगवान श्रीकृश्ण को अर्पित कर दिया था जो उनके अन्त समय में मोक्ष की प्राप्ति का माध्यम बना। उनका केवल एक ही लक्ष्य रहा अपनी पद रचनाओं के माध्यम से हाथ में इकतारा लेकर गायन एवं नृत्य कर अपने प्रियतम कृष्ण को रिझााना एवं उनको आनन्दित करना।

**हिन्दी फिल्म संगीत में मीरा के भक्ति संगीत द्वारा भावाभिव्यक्ति** :– वर्तमान समय में चित्रपट संगीत जनसाधारण के मनोरंजन का सशक्त साधन है। जैसा कि हमें विदित है कि संगीत की अनेक विधाओं जैसे शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, भाव संगीत एव चित्रपट संगीत का निर्माण संगीत को परिश्कृत और समृद्ध बनाए रखने और उसे स्थायित्व प्रदान करने के लिए किया जाता है। संगीत के इन प्रकारों में से हिन्दी चित्रपट संगीत ने जो मुकाम हासिल किया वह किसी और विधा ने नहीं किया। आधुनिक समय में हर वर्ग का मानव इस विधा से प्रभावित हो रहा है। हमारे भाोध विशय के अनुसार हिन्दी फिल्मों में मीरा के पदों एवं रचनाओं को भली भांति दर्शाया है। भक्त शिरोमणि मीरा के हृदय से उन्हें जो भी प्रेरणा अथवा अनुभव मिलता उसी को वह अपने काव्य रचनाओं को संगीत बद्ध कर नृत्य एवं गायन कर कृष्ण के प्रति अपने भावों को प्रकट करती थी। उनके गीति काव्यों में भावों की अभिव्यक्ति को हिन्दी फिल्म संगीत द्वारा भावपूर्ण रूप से दर्शाया गया एवं मीरा बाई की अनूठी संगीत साधना का पूरे विश्व में प्रचार–प्रसार किया गया, जिसके द्वारा जनसाधारण को संगीत के माध्यम से धार्मिक एवं अध्यात्मिक रूप से जोड़ने का कार्य किया गया।

श्रीकृष्ण के प्रिय भक्तों में मीरा का स्थान सर्वविदित है। मीरा की मधुर पदावली सर्वत्र भक्ति भाव से संगीतमय, लयात्मक रूप से हर क्षेत्र में चाहे वह लोक संगीत हो, भाव संगीत हो या फिर चित्रपट संगीत हो में गाई बजाई जाती है। अतः कहने का अभिप्राय है कि चित्रपट संगीत में अधिक मीरा के भक्ति गीतों एवं रचनाओं का अधिकाधिक भाास्त्रबद्ध प्रयोग प्रचूर मात्रा में मिलता है। उनका रचनाओं को अनेक संगीतकारों ने भिन्न–भिन्न रागों में बांधकर विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति कर जन–साधारण के सम्मुख प्रस्तुत किया।

संगीत की दृश्टि से मीरा–साहित्य प्रयाप्त समृद्ध है। जिस युग में मीरा ने जन्म लिया वह युग साहित्य एवं संगीत का स्वर्ण युग था। मीरा के पदों में आंतरिक संगीत की स्पश्ट झलक दिखाई देती है। संगीत के राग–रागनियों में निबद्ध रचनाओं का सफल प्रयोग मीरा ने अपने गीति काव्यों

एवं पदों में किया है। राग, तिलंग, ललित, हमीर, जोगिया, मल्हार, झिंझोटी, कान्हडा, रामकली, खमाज आनन्द–भैरव, सूहा, काफी, छायानट मुल्तानी पहाड़ी बिलावल, जय–जयवन्ती, वृन्दावनी सारंग, देवगिरी बिलावल इत्यादि अनेक रागों तथा तालों में कहरवा, धमार, तीनताल, रूपक, चर्चरी, दादरा एवं झपताल आदि का प्रयोग मीरा के साहित्य में प्राप्त होता है।[1] हमारे विशय के अनुसार इनमें से अधिकतर रागों को प्रयोग कर हिन्दी फिल्म संगीत के द्वारा मीरा के भक्ति गीतों एवं पद–रचनाओं को प्रस्तुत किया गया।

हिन्दी फिल्मों में मीरा की रागबद्ध रचनाओं में भक्ति भाव, प्रेम भाव, विरह भाव एवं वैराग्य भाव को संगीतिक रूप देकर पूर्ण रूप से दर्शाया गया है। सन् 1950 में फिल्म 'जोगन' में मीरा के **''घूँघट के पट खोल''** पद को संगीतकार बूलो सीरानी ने राग **जौनपूरी** में संगीतबद्ध कर प्रदर्शित किया गया। इस भजन को गीता दत्त ने अपने स्वरों से अलंकृत किया। इस भजन में **भक्ति** भाव को भली भांति सहज रूप से जनसम्मुख में प्रकट किया गया। इसके अतिरिक्त सन् 1979 में मीरा बाई की जीवनी को पूर्ण रूप से निर्माता एवं गीतकार गुलजार द्वारा निर्मित फिल्म '**मीरा**' में चरितार्थ किया गया। जिसके संगीत को काफी प्रसिद्धि मिली। इस फिल्म में मीरा की भूमिका अभिनेत्री हेमा मालिनी, संगीतकार पंडित रविशंकर, वाणी जयराम एवं दिनकर कोनकानी ने अपनी मधुर वाणी से अलंकृत किया। इस फिल्म के माध्यम से मीरा के सम्पूर्ण चरित्र एवं गाथा को विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति कर विश्व भर में प्रचलित किया गया। इस फिल्म के अविस्मरणीय संगीत को आज भी लोग सुनकर आनन्द विभोर हो जाते हैं। मीरा बाई के पद में गायन, वादन एवं नृत्य का समन्वय स्वतः ही दिखाई देता है। जैसेः–

**मैं सावरे के रंग राची**
**साजि सिंगारि**
**बांधि पग घुँघरू लोक लाज तज नाची**

इस पद को पंडित रविशंकर जी ने राग **देस** में संगीतबद्ध किया। इस भजन में कृष्ण भक्ति में लीन, सुद्ध–बुद्ध खोई मीरा को **भक्ति** भाव विभोर होते दर्शाया गया है। अतः इस भजन के द्वारा **भक्ति** भाव की उत्पत्ति सहज ही होती दिखाई देती है। इसके अतिरिक्त इसी फिल्म में फिल्माया भजन –

**मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो ना कोई,**
**जोके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।**

में **भक्ति** भाव की सहज ही अभिव्यक्ति होती है। इस भजन में मीरा ने कृष्ण के रूप रंग अद्भुत छटा का वर्णन किया है एवं अपनी अनन्य भक्ति का परिचय दिया। इस भजन को काफी प्रसिद्धि प्राप्त हुई। वाणी जयराम द्वारा स्वरालंकृत किया यह भक्ति गीत जन साधारण द्वारा काफी पसन्द किया गया।

तत्पश्चात् यदि प्रेम भाव की बात करें तो मीरा बाई अपने प्रियतम कृष्ण को बाल्यकाल से

ही प्रेम करती थी। उसने मन में बाल्यकाल से ही कृष्ण की सूरत एवं मूरत समाई थी एवं कृष्ण को ही वह अपना वर स्वीकार कर चुकी थी। अतः उनके भक्तिगीतों में कृष्ण के प्रति प्रेमभाव अद्भुत छटा दिखाई देती है। मीरा बाई का कृष्ण के प्रति प्रेम केवल अपने प्रियतम के दर्शन की अभिलाशा तक ही था। उनके दर्शनों की तृश्णा के कारण उन्होनें घर छोड़कर वैराग्य धारण कर लिया और वृन्दावन में वास किया जहां संगीत को विशेश स्थान प्राप्त था।[2]

सन् 1955 के दशक में आई फिल्म **''झनक झनक पायल बाजे''** में मीरा के पद–

**''जो तुम तोड़ो पिया मैं नाही तोडूं,**
**तोरी प्रीत तोड़ कृष्ण कौन संग जोडूं।''**

को बसन्त देसाई जी ने राग **'भैरवी'** में संगीतबद्ध कर प्रस्तुत किया जिसको भारतरत्न लता मंगेशकर जी ने अपने स्वरों से अलंकृत किया। इस भजन में मीरा जी के कृष्ण के प्रति अपार **प्रेम** भाव को सहज रूप में प्रदर्शित किया गया।

इसके अतिरिक्त 1970 में आई ''**मीरा**'' फिल्म में मीरा के इसी पद को राग **यमन** में बांध कर जो **प्रेम** भाव व लगन को दर्शाया गया वह देखते ही बनता है। पंडित रविशंकर जी ने राग **यमन** में मीरा जी के इस भजन को संगीतबद्ध किया जो कि बहुत प्रचलित हुआ। अभिनेत्री हेमा मालिनी ने मीरा के **प्रेम** भाव को बहुत सहजता से अभिनित किया। मीरा जी के इसी पद को सन् 1981 में यश चौपड़ा द्वारा प्रदर्शित हुई फिल्म सिलसिला में दर्शाया गया जिसका संगीत संगीतकार शिवकुमार एवं हरिप्रसाद चौरसिया जी ने दिया। इस भजन को राग **चन्द्रकौंस** में बांधकर पंचम स्वर का अद्भुत प्रयोग कर **प्रेम** भाव की अभिव्यक्ति की गई। मुख्य रूप से मीरा जी के इन गीतिमय रचनाओं को फिल्मों के माध्यम से काफी प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

हिन्दी फिल्मों के माध्यम से दर्शाये गए मीरा बाई के अनेक पदों एवं रचनाओं को संगीतबद्ध कर कृष्ण के प्रति **विरह** भाव को अभिव्यक्ति किया गया। विभिन्न **करूणा** रस प्रधान रागों के माध्यम से मीरा की विरह वेदना को स्पश्ट रूप से प्रदर्शित किया गया है। हिन्दी फिल्म संगीत के द्वारा मीरा के काव्यों एवं पदों को रागों में बाँधकर विभिन्न रसों एवं भावों को बड़े ही प्रभावशाली ढ़ग से जन साधारण के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। मीरा के पदों, काव्यों एवं संगीत में हृदय की वेदना और कृष्ण के प्रति अथाह प्रेम, भक्ति एवं लगन की अनुभूति होती है।

हिन्दी फिल्म संगीत में प्रयोग किए गए मीरा के भजनों में पूर्णरूप से भाास्त्रीय संगीत के भिन्न–भिन्न रागों एवं स्वरों का सामंजस्य प्रतीत होता है।

मीरा बाई का संगीत, रचनाएँ उनका सर्वस्व कृष्ण को समर्पित था। जिस कारण उन्होनें वैराग्य को धारण किया। हिन्दी फिल्म संगीत में कई भजनों में मीरा जी के **वैराग्य** भाव को दर्शाया गया।

**''बाला मैं बैरागन हूंगी**
**जिनो भेशा मेरो साहब रीझे**
**सो ही भेश धरूंगी।''**

इस राग बद्ध रचना के द्वारा मीरा के **वैराग्य** भाव को बड़े ही प्रभावशाली ढ़ग से प्रदर्शित किया गया। वाणी जयराम जी ने इस भजन को इस प्रकार गाया जैसे की स्वयं मीरा बाई ही गा रही है। इस बहुत ही मधुर भजन को काफी पसंद किया गया। इसके अतिरिक्त 1989 में निर्माता कल्पतरू द्वारा निर्मित फिल्म **''बड़े घर की बेटी''** में मीरा के पद

**''कर ना फकीरी तेरी क्या दिलदारी, सदा मगन में रहियो जी**
**कोई दिन हाथी ना कोई दिन घोड़ा कोई दिन पैदल चलियों नी।''**

का प्रयोग कर मीरा के **वैराग्य** भाव का दर्शाया। इस भजन को संगीतकार लक्ष्मीकांत प्यारे लाल और सुरेश वाडेकर एवं कविता कृश्णामूर्ति जी ने अपने स्वरों से सजाया।

करूणा प्रधान कई रागों का प्रयोग कर जैसे तोड़ी, पूरिया धनाश्री आदि रागों का प्रयोग कर मीरा के भजनों को फिल्मों के माध्यम से उनके प्रियतम कृष्ण के प्रति विरह वेदना एवं भावों को भली भांति प्रयोग किया गया।

फिल्म 'मीरा' में ही प्रयोग किए गए मीरा के इस भजन में मीरा की विरह वेदना को भावपूर्ण ढ़ग से अभिव्यक्ति की गई जो इस प्रकार है :–

**''करूणा सुनो भयाम मोरी**
**मै तो ही रही चेरी तेरा।''**

पंडित रविशंकर जी ने राग **पूरिया धनाश्री** में बांध कर **करूण** रस प्रधान इस भजन को बहुत ही सुन्दर ढ़ग से प्रस्तुत किया। अपने प्रियतम कृष्ण के विरह में व्याकुल मीरा की व्यथा को इस भजन के माध्यम से मीरा की सच्ची भक्ति भवना को परिलक्षित किया, जिसमें काव्य और संगीत की अत्यन्त विलक्षण सुगन्ध की अनुभूति करवाई गई।

विरह की व्यथा, प्रेम की पराकाश्ठा अमर भक्त मीरा के एक और भजन का प्रयोग राग तोड़ी में बांधकर फिल्म '**मीरा**' में प्रयोग किया गया।

**''ए री मै तो प्रेम दीवानी**
**मेरो दर्द ना जाने कोई।''**

इस भजन में मीरा के सम्पूर्ण जीवन के अनुभव, उनके समस्त काव्यों का उनके संगीत एवं उनकी कृष्ण के प्रति भक्ति एवं समपर्ण के निश्कर्श को दर्शाया गया। उनकी अन्तिम जीवन यात्रा को चमत्कारिक ढ़ग से प्रस्तुत कर इस भजन को अमरत्व प्रदान किया।

**निष्कर्ष** :– इस शोध विशय के अनुसार हिन्दी फिल्मों में मीरा के पदों, काव्य रचनाओं एवं संगीत का जितना प्रयोग हुआ उसने हमारी आध्यात्मिक एवं धार्मिक संस्कृति से जन साधारण से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह अनमोल धरोहर आज भी हिन्दी फिल्म संगीत के माध्यम से सुरक्षित है। मीरा जी की कृष्ण भक्ति एवं संगीत का प्रचार–प्रसार कर विभिन्न भावों की

अभिव्यक्ति को साक्षात् परिलक्षित करने का मुख्य श्रेय हिन्दी फिल्म जगत को जाता है। जो हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

## संन्दर्भ सूची

1. संगीत सम्प्रति, लावण्य सिंह कीर्ति काव्या, पृ॰ स॰ – 169
2. निबंध संगीत, संकलन, लक्ष्मी नारायण गर्ग, पृ॰ स॰ – 551